स्मारिका

2011

हिंदी- सप्ताह

दिल्ली पब्लिक स्कूल [illegible]

सूची

सुलेख - रिचा सिंह सात-ब

कहानी लेखन -

बुद्धिमान बालक - चार्वी द्विवेदी आठ

परिश्रम का फल - आरुषि सिंह आठ

कविता लेखन -

पावस ऋतु - हाजिक जमील नवीं ब

वर्षा रानी - स्कन्द शर्मा दसवीं द

आज का पर्यावरण - निशेन्द्र सिंह नवीं स

प्रकृति - सजल जैन दसवीं ब

संस्मरण लेखन -

वह तूफ़ानी रात - श्रेया सिंह ग्यारहवीं द

सह शिक्षा से मिली शिक्षा - अंजली शर्मा ग्यारहवीं द

सुलेख

गाँधी जी ने लिखा है कि हँसी आयु बढ़ाने का अचूक नुस्खा है। पाचन के लिए कारगर और प्रामाणिक औषधि कोई नहीं है। हँसी हमें किसी के भी तन-मन के श्रेष्ठ स्वास्थ्य का संवाद देती है। वह रक्त प्रक्रिया को गतिशील करती है, अधिक पसीना लाती है। कारलाइल ने कहा है कि जो व्यक्ति मुक्त भाव से हँसता है, वह कभी बूढ़ा नहीं हो सकता। खुलकर हँसो, तुम्हें अच्छा लगेगा, अपने साथी को हँसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा, अधिक देर तक तुम्हारा साथ चाहेगा। शत्रु को हँसाओ तुम्हारे प्रति उसका विरोध कम हो जाएगा। किसी अजान को हँसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हँसाओ तो उसका दुख कम हो जाएगा। निराश को हँसाओ उसमें आशा की प्रफुल्लता आ जाएगी। एक बूढ़े को हँसाओ, वह अपने को जवान समझने लगेगा। किंतु मित्रों हमारे जीवन का उद्देश्य केवल हँसी-मज़ाक नहीं है। हँसते-मुस्कुराते हुए भी जीवन की समस्याओं का गंभीरतापूर्वक मुकाबला किया जाना चाहिए।

रिचा सिंह
सात 'ब'

बुद्धिमान बालक

यह कहानी एक राजू नाम के लड़के की है, जो सीतापुर नामक गाँव में रहता था। राजू को घूमना-फिरना बहुत पसंद था।

राजू अपनी नानी से मिलने उनके घर गया था, जब वह वहाँ से वापस आने के लिए बस में चढ़ा तो उसने बहुत से आदमियों को बात करते सुना, वे कह रहे थे कि इस बस के ड्राइवर को बस चलाना नहीं आता वह दो बार बस खाई में गिराने वाला था। राजू ने जब यह सुना तो सोचने लगा कि इस बस से सफर करना खतरे से खाली नहीं है, लेकिन उसे आज घर पहुँचना था इसलिए उसने इसी बस से जाना ठीक समझा।

बस चलने के थोड़ी देर बाद एक सुनसान जगह पर ड्राइवर ने बस रोक दी और बस में चार आदमी घुसे और ड्राइवर को पकड़ लिया और कहा कि कोई शोर नहीं मचाएगा, सब अपना बैग उन्हें दे दें। और जब उन्होंने ऐसा कहा तो सब लोग चीखने-चिल्लाने लगे तभी उनमें से एक आदमी ने एक बुज़ुर्ग महिला के गले पर चाकू रख दिया फिर ड्राइवर से गाड़ी चलाने को कहा। जैसे ही उन्होंने सामान लूट लिया वे गाड़ी से कूद गए। उनके कूदते ही ड्राइवर ने बस से उनका पीछा करने की कोशिश की पर वे सब भाग गए। बस के यात्रियों ने सीतापुर के पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट दर्ज कराई और सब अपने घर चले गए।

राजू ने जब घर आकर अपना बैग खोला तो उसमें उसे एक पत्र मिला, जिस पर किसी का नाम नहीं लिखा था। इस पत्र में लिखा था कि- हमने बस लूट ली है। राजू ने यह पत्र पुलिस को

देने का फैसला किया। जब वह पत्र देकर लौटा, तब उसे याद आया कि पत्र पर श्यामपुर की स्टैम्प लगी था। राजू ने जाकर श्यामपुर के पोस्ट ऑफिस से पता किया तो उसे उन आदमियों का पता मिला, राजू ने वह पता पुलिस को दे दिया और पुलिस को चोरों का पता चल गया। पुलिस ने उन आदमियों को पकड़ लिया और सभी को उनका सामान वापस कर दिया। राजू को उसकी बुद्धिमानी का इनाम मिला।

चार्वी द्विवेदी

8-B

परिश्रम का फल

एक बार एक गाँव में बहुत तेज बारिश हो गई, जिसके कारण सारे किसानों की फसलें खराब हो गई। फिर वो मुखिया के पास गए और उन्होंने बताया कि हमारी सारी फसलें खराब हो गई। मुखिया बोले – "तो क्या हुआ फिर से उगादो"। किसान बोले – "फसल क्या दो दिन में थोड़ी न उग जाती है", उसके लिए हमें उससे भी ज्यादा परिश्रम करना पड़ेगा। फिर सारे किसान चले गए। उनमें से एक किसान का नाम रामू था, वह बहुत गरीब था लेकिन बहुत परिश्रमी और लालच तो उसके दिमाग से लेकर पैरों तक था ही नहीं। वो बहुत साधारण था। उसने मुखिया से कहा – "मुखिया जी मैं परिश्रम करके फिर से फसल उगाऊँगा, इसके लिए मुझे कुछ भी करना पड़े। फिर वो चला गया और अगले दिन उसने फसल उगाना शुरु किया।

ऐसे करके उसकी फसल कुछ रंग लाने लगी उसने अपने दिन-रात एक कर दिया, वो सोचता था कि मुझे अपने दिन-रात एक करने पड़े तो क्या हुआ, इससे हमारे गाँव में जो लोग हैं उनका तो पेट मैं भर सकता हूँ आखिर एक किसान का धर्म यही तो होता है। एक बार जब रामू अपने खेत में खेती कर रहा था तो खुदाई करते समय उसे कुछ मिला। कुछ चम-चमाता था, उसने उसे निकालने की कोशिश की, वह नहीं निकला। फिर उसने और खुदाई की और फिर उसे निकाला। वो एक थैला था जिसमें सोने की गिन्नियाँ थीं।

उसने सोचा यह यहाँ पर कैसे आया। फिर वो मुखिया के पास गया और उनसे बोला कि मुझे यह थैला मिला है, तो बाकी के किसान जो खड़े थे, उनका मन ललचाया और वो कहने लगे यह तो मेरा है। फिर मुखिया ने बोला – "सब शांत हो जाएँ"

यह सोने की गिन्नियाँ मैंने ही डालीं थी देखने के लिए कि कौन लालची बनता है और कौन नहीं। उन्होंने इसलिए ठीक कहा है—"परिश्रम का फल मीठा होता है।

आरुषी सिंह
8 - D

पावस ऋतु

गर्मी की हो गई विदाई,
हरियाली फिर से लौट आई,
देखो वर्षा ऋतु है आई ;
अंबर के आनन को घेरा,
कजरारे मेघों के दल ने ।
गर्मी से कुछ राहत पाई,
ज्वलित - प्राण संसार सकल ने ॥
समाप्त हो गई व्यथा धरा की,
आई नई आशा,
छूट गई सारी व्याकुलता,
ज्यों दूर हुई निराशा ।
देखो प्राकृतिक सुंदरता का दृश्य,
लगे हमारे मन को सुहावना
जगाए मनुष्य में प्रेम की भावना ।
धान के पौधे को जीवन मिल गया
धूप से झुलसा अब चमन खिल गया
देखो बच्चों ! मोर का नाच
हिलाए अपने शरीर का हर भाग
मोरनी को भाए और हम सब को लुभाए,
वर्षा में यह अपनी कला दिखाए ।
वर्षा का यह आगमन,
किए प्रसन्न सब के मन ॥

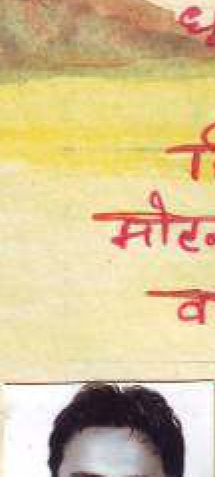

हाज़िक जमील

वर्षा रानी

धरा पर छाई हरियाली,
वर्षा से खिली हर डाली,
गाती कोयल नील गगन में,
मस्ती सी छाई पवन में।

हरियाली छाई है वन में,
सूरज छुप गया नील गगन में,
उड़ते पक्षी निज खग दल में,
नई उमंग छाई हर मन में.।

हँस दीं नन्ही सी कलियाँ,
भर गईं बच्चों से गलियाँ,
हर तरफ़ खिले हैं फूल,
शांत, शीतल नदियों के कूल।

इंद्रधनुष है नभ में छाया,
जिसे देख हर मन मुस्काया,
देखो ये वर्षा मस्तानी,
आ गई ऋतुओं की रानी।

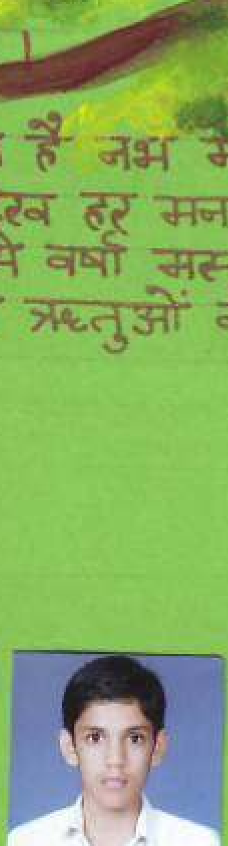

स्कंद शर्मा

आज का पर्यावरण

आज-कल के पर्यावरण का यह कैसा है हाल
जंगल, नदियाँ, जीव-जंतु हैं बेहाल।
कहीं कचरे के ढेर तो कहीं सड़कों पर जल-ताल
बेचारे पशु-पक्षियों के निकल रहे हैं प्राण।

जहाँ थे बादल, वहाँ अब हैं धुओं का अंबार,
यह सब है इंसान के लोभ-स्वार्थ का जाल।
जीव जंतु अब गिनती के मिलते हैं,
शेर-मोर अब चिड़ियाघरों में मिलते हैं।

जंगल जो कुछ बचे हैं
ज्यादा दिन क्या वो टिक पाएँगे?
या इस इंसान के मोह के कारण
वे भी शीघ्र ही अस्तित्व हीन हो जाएँगे।

तब इंसानों का हो जाएगा बुरा हाल,
याद करेंगें वह अपना बीता काल।
जब पर्यावरण असंतुलित हो जाएगा,
तो क्या मानव इस धरा पर सुख से रह पाएगा?

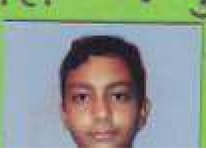

निरोन्द्र

[प्रकृति]

फ़र्ज है अपना प्रकृति को बचाना,
अनमोल है जीवन इस धरा पर
खुदा ने दिया है यह नज़राना।
जियें अब कैसे? यह एक सवाल है।
प्रकृति का यह उपहार बेमिसाल है,
हो रहा है दोहन, इसका इतना,
जीवन पर आ पड़ी है कैसी विपदा?

भरते हैं यह पेट तुम्हारा,
पशुओं का भी पालन करते हैं,
करके ग्रहण ये CO_2
हमारे जीवन को मधुर बनाते हैं।
आज इन्हें बचाओगे तो,
कल जीवन भी बच जाएगा
दिख रहा है जो भविष्य खतरे में,
खतरे से बाहर आ जाएगा।
लगाकर पेड़ ज़्यादा से ज़्यादा
हमें इस ज़मीं को सजाना है
पूजनीय है यह प्रकृति,
इस संजीवनी को बचाना है।

सजल जैन

संस्मरण

वह तूफ़ानी रात

आज जब नज़र घुमा कर चाँद की ओर देखा तो पाँच साल पुरानी रात याद आ गई जब पापा किसी काम से बाहर गए हुए थे, घर में सब थे (मैं, माँ, भाई व नानाजी) स्कूल की अगले दिन छुट्टी थी, शायद इसीलिए हम उस रात देर तक सोए न थे।

रात्रि अपने चरम पर थी, बाहर ठंडी हवाएँ चल रही थीं, तभी मैं भ्रमित हुई मानो कोई दरवाजा पीट रहा हो। परन्तु माँ ने बताया, वह भ्रम न था, वाकई दरवाजे पर कोई था। नानाजी ने दरवाजा खोलने से पहले खिड़की में से झाँकना ठीक समझा, तो पाया कि एक असहाय स्त्री अपने निर्वस्त्र बच्चे को लिए खड़ी थी। दरवाजा खोलने की देर न थी कि उसने मिन्नतों की गुहार लगाना शुरु कर दिया "बीबीजी मैं एक असहाय स्त्री हूँ, मेरा बालक भूख और ठण्ड से बिलख रहा है, दया करके मुझे एक रात सर छुपाने की जगह तथा दो रोटी दे दो, मेरा घरवाला सूरज निकलते ही हमें ले जाएगा।"

मेरा दिमाग शंका की घंटी से बज उठा, परन्तु उस रात मेरे हृदय की मानवता ने मेरी छठी इन्द्री पर परदा डाल दिया। माँ ने मुझे बाहर वाले कमरे का ताला खोलने का इशारा किया, मैंने उसे गरम दूध-रोटी देकर कमरे का मार्ग दिखाया, मैंने एक सुकून का अनुभव किया उन्हें खाते देख। मेरा छोटा भाई बहुत शरारती है, वह उस बच्चे को छुप कर खिड़की से ताक रहा था, तो उसने आकर बताया कि, "माँ उस स्त्री पर एक बहुत बढ़िया मोबाइल है।" हम सब के मन में एक ही सवाल था "क्या मोबाइल?" सबसे पहले माँ ने स्थिति की गंभीरता को समझते हुए हम सब बच्चों को कमरे में जाने को कहा। मेरे दोनों भाई छोटे थे, वे माँ की बात का उल्लंघन कैसे करते, परन्तु मेरे बड़े होने के एहसास ने मुझे अन्दर न जाने दिया। माना कि ११ साल का बच्चा कुछ नहीं कर पाता परन्तु, शायद १ साल का बच्चा भी खुद को महाबली समझता है। माँ नानाजी से सलाह करने उनके कमरे में गईं। नानाजी ने पुलिस को बुलाने का फैसला किया और सामान्य तौर पर पेश आने को कहा। हम पर एक-एक पल भारी पड़ रहा था। माँ ने मुझे बहलाया, "बेटा तू बाहर मत जा, कमरे की रक्षा कर" मानो मेरी कर्तव्य की भावना

जाग उठी हो। फिर पुलिस ने अचानक दरवाजे पर दस्तक दी, हमें सुरक्षा प्रदान की और महिला पुलिस ने उस स्त्री को धर-दबोचा परन्तु बच्चा न मिला। जब जाँच चली तो पता चला कि वह स्त्री एक नहीं बल्कि पूरे सात लोगों के साथ चलती थी और मौका पाते ही चोरी करती थी तथा आवश्यकता पड़ने पर घर मालिकों को मार डालती। हम सब सहम गए, शायद ही कोई सोया होगा। तथा सब ने निश्चय किया कि आगे से किसी भी अपरिचित को घर में नहीं घुसने देंगे।

श्रेष्ठा - सिंह
११ 'ड'

सहशिक्षा से मिली शिक्षा

यूं तो मैं कई वर्षों तक दिल्ली पब्लिक स्कूल अलीगढ़ में पढ़ी और मैं पढ़ाई से लेकर अन्य कार्यों तक, सब में अच्छी रही। माता-पिता से लेकर अध्यापक-अध्यापिकाओं तक सभी मेरी प्रशंसा करते थे। इस साल सन् 2011 में जब मैं ग्यारहवीं कक्षा में आई तो न जाने मेरे जीवन में कैसे परिवर्तन आए? मेरी दोस्ती गलत लोगों से हो गई और मेरी सहेलियों ने मुझे आई.डी बनाना सिखाया। फिर शुरू हुआ बिगड़ने का सिलसिला। मैं और मेरी सहेलियाँ रात-रात तक फेस बुक पर चैटिंग और मैसेजिंग करते, पढ़ाई की ओर हमारा ध्यान कम होने लगा। हमें सही राह दिखने वाला कोई न था। माता-पिता अपने-अपने कार्यों में व्यस्त रहते, हम पर नजर रखने वाला कोई न था। कहा जाता है यह उम्र ही ऐसी होती है। मैंने किताबों और कहानियों में एक ही बात पढ़ी थी कि अगर जिंदगी में सफलता चाहिए तो कम से कम दुश्मन बनाओ। इसी कारण क्लास के सभी बच्चों को मैं अपना मित्र समझती थी, परंतु मैं एक बात भूल गई थी कि सभी मित्र सच्चे नहीं होते, सच्चे मित्र तो बहुत मुश्किल से मिलते हैं। इसी बीच एक लड़का जो इसी साल आया था, उसने मेरी तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाया। मैं तो जैसे पागल थी जो सभी को अच्छा समझती थी। इसलिए बिना ठीक से जाने मैंने उस लड़के से दोस्ती कर ली।

मेरे मन में उस लड़के के लिए हमेशा दोस्ती और इज्जत का भाव रहा, पर पता नहीं उसने अपने मन में हमारी दोस्ती को कब क्या समझ लिया? वो मेरे सामने अच्छा बनने की खातिर सभी लड़कियों की मदद करता। शुरुआत में तो हम एक-दूसरे से कम बात करते पर धीरे-धीरे हमारी दोस्ती गहरी हुई और हम एक-दूसरे से खूब बात करने लगे। हम एक-दूसरे को समझते थे और एक-दूसरे की पढ़ाई में मदद करते थे। उस लड़के ने मेरा मोबाइल नंबर माँगा, पर मैंने उसे नहीं दिया। मैं जानती थी कि हमारे समाज में ऐसी दोस्ती के लिए कोई जगह नहीं है, क्योंकि हमारे संस्कारों में यह संस्कृति स्वीकार नहीं है। नंबर न मिलने पर उसने फेसबुक पर बात करने का बार-बार आग्रह किया, तो अंत में मैं मान गई। बस यहीं मुझ से भूल हो गई। फिर हम मैसेजिंग के सहारे एक-दूसरे से बात करने लगे। फिर एक दिन उसने मुझ से अपने मन की बात कही कि वो मुझ से प्यार करता है। उसके शब्दों ने मुझे झकझोर दिया। वह इतना नादान होगा, मैंने सोचा न था। मैंने उसे बहुत समझाया, परंतु वह न माना।

फिर एक दिन वह लड़का अपने मित्र से कह रहा था कि वो मुझे पसंद करता है। मेरी सहेली ने दोस्ती का फर्ज निभाते हुए उसे डाँटा। अगले दिन मेरी सहेली ने मुझे पूरी बात बताते हुए कहा कि वह उस लड़के की मैडम से शिकायत करेगी। मैंने अपने सहेली से तो

कुछ नहीं कहा, परंतु मैंने दोस्ती के नाते उस लड़के को समझाया कि माफ़ी माँग ले, परंतु उसने माफ़ी नहीं माँगी। मैडम के सामने भी मैंने उसे बचाने की कोशिश की, फिर भी उसे ५-६ चाटें खाने पड़े। उसी दिन मैंने उस लड़के से दोस्ती तोड़ दी और कहा- "दोस्ती के नाते मैंने तुम्हें बचाने की कोशिश की, परंतु तुम्हें 'मित्रता' शब्द का अर्थ ही नहीं पता। तुम्हें दोस्ती जैसा पवित्र रिश्ता निभाना नहीं आता।"

उस दिन के बाद मैंने उस लड़के से कभी बात नहीं की और वह क्लास में उदास बैठने लगा। उस ने पढ़ना-लिखना बंद कर दिया। फिर उसने कहीं से पापा का मोबाइल नंबर निकाल लिया और मेरी एक सहेली से पुछवाया कि क्या यह मेरा नंबर है? मैंने कहा- "नहीं! पापा का।" यह जानने के बाद भी उसने पापा को मैसेज कर दिया। पापा ने मैसेज पढ़ने के बाद मुझे डाँटा और उस लड़के की वाइस प्रिंसिपल से शिकायत कर दी। पापा के कहने पर मैंने भी उस लड़के की वाइस प्रिंसिपल से शिकायत कर दी। उस लड़के ने मेरे द्वारा किए हुए सभी मैसेज सर को दिखा दिए और कहा- "मैं इसे पसंद करता हूँ।" यह सुनकर सर ने मुझे डाँटा और उस लड़के को स्केल खाने पड़े।

इस घटना के बाद मम्मी-पापा, नाना-नानी, भाई आदि सभी ने मुझ से बात करना बंद कर दिया। मैंने उन्हें वचन देते हुए कहा- "माफ़ कर दो! आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगी।" यह सुनकर सब ने माफ़ तो कर

दिया, परंतु उनका विश्वास पुनः जीतने में काफ़ी समय लगा।

इस घटना से मैंने सीखा सच्चा मित्र बहुत मुश्किल से मिलता है। बुरी संगति काजल से बना कमरा है, जिसमें गलती से भी चले जाओ दाग तो लगेगा ही। अधिकतम लोगों की सोच बड़े होने के बावजूद छोटी की छोटी रहती है। हमें समाज के बारे में सोच कर ही कोई भी कदम आगे बढ़ाना चाहिए। बुरा मित्र दलदल में धँसा देता है, परंतु अच्छे मित्र के साथ से सफलता मिलती है। अतः हमें मित्र सोच-समझकर चुनने चाहिए क्योंकि -

"काजल की कोठरी में, कैसे हूँ सयानो जाय।
एक लीक काजल की, लागी है पै लागी है।"

अंजली शर्मा
XI/D